International Journal of Applied Research 2017; 3(4): 341-342

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(4): 341-342
www.allresearchjournal.com
Received: 22-02-2017
Accepted: 23-03-2017

मन्जू देवी
सहायक प्रो0, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय सफीदों- जीन्द, हरियाणा, भारत

Correspondence
मन्जू देवी
सहायक प्रो0, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय सफीदों- जीन्द, हरियाणा, भारत

नन्ददास के काव्य में अलंकारः योजना

मन्जू देवी

प्रस्तावना

शोध आलेख सारः- काव्य में अलंकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। चाहे वे साधन रूप में आए हों या साध्य के रूप में। इन से काव्य के सौन्दर्य में वृद्धि हुई है। अलंकारों को काव्य-सौन्दर्य का अनिवार्य तत्व स्वीकार करते हुए आचार्यों ने भी इनको अलग-अलग संज्ञा दी है।

मुख्य अंशः भाषा में अलंकार व उसकी सजावट।
हिन्दी के विद्वानों ने भी काव्य में अलंकारों की भूमिका के विषय में कहा है -
सुमित्रानन्दन पंत - ''अलंकार केवल वाणी के सजावट के लिए नहीं, वे भाव की अभिव्यक्ति के विशेषद्धार हैं। भाषा की पुष्टि के लिए राग की परिपूर्णता के लिए आवश्यक उपादान है, वे वाणी के आचार, व्यवहार, रीति-नीति है।'' [1]
डॉ0 ओम प्रकाश शर्मा ने भी अलंकारों की काव्य में महत्वपूर्ण भूमिका के विषय में कहा है-
अलंकार काव्य में सहजता से आने के कारण परम उपयोगी तत्व है। जिनके बिना काव्य-जगत चमत्कारहीन ही रहता है। आभाहीन काव्य सुधी एवं रससिद्ध पाठक को कब पसन्द होगा''।
वास्तव में अलंकार काव्य के लिए है। काव्य अलंकारों के लिए नहीं। आधुनिक शोध कर्ताओं ने अलंकारों का वर्गीकरण तीन रूपों में किया है -

1. शब्दालंकार 2. अर्थालंकार 3. उभयालंकार।
उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि नन्ददास ने भी अपने काव्य को सुशोभित एवं सौन्दर्य वृद्धि करने के लिए सभी अलंकार का प्रयोग सशक्त एवं सरल ढंग से प्रयोग किया है। उनके काव्य का अलंकार विवेचन इस प्रकार हैः-

1. शब्दालंकारः नन्ददास के काव्य में शब्दालंकारों की प्रचुर मात्रा देखने को मिलती है। अनुप्रास अलंकारों की छटा तो सर्वत्र विद्यमान है। वक्रोक्ति, पुनरूक्ति, वीप्सा, यमक, श्लेष आदि शब्दालंकार नन्ददास के काव्य में पाए जाते हैं। शब्दालंकारों से सम्बन्धित उनके काव्य के कुछेक उदाहरण देखिए अनुप्रास अलंकारः- ''वा गुन की परछाँही, माया-दरपन बीचा गुन ते गुन न्यारे, अमल वारि मिली कीचा।'' [2] (अनुप्रास अलंकार)
''मन्द मन्द चलि चारू चंद्रिका असछति पाई। उझकति हैं प्रिय रमा-रमन कौं मनु टकि आई।'' [3]
(अनुप्रास अलंकार)

यमक अलंकारः- जहां निरर्थक समूह की आवृति होती है, वहां यमक अलंकार होता है। नन्ददास जी ने यमक अलंकार का अधिक प्रयोग नहीं किया। उन्होंनें अपनी भावाभिव्यक्ति को सरल बनाने के लिए इस अलंकार का प्रयोग किया है।

उदाहरणार्थ- ''मधुर मधुर मुसकान बिलोलित उर बनमाला।
केवल मनमथ मनमथ चंचल नैन बिसाला।'' [4]

वीप्साः- 'आहर, घृणा, हर्ष, शोक आदि भावों को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए शब्दों की आवृति की जाये तो वहाँ वीप्सा अलंकार होता है।' [5] नन्ददास ने वीप्सा अलंकारों के प्रयोग से भी अपने काव्य को माधुर्यप्रदान किया है यथा ''हरे-हरे पीय हमहिं तौ प्रान पियोर। कट अटली-मंहि अटत गड़त तृन-कूटन-यारे।।''
श्लेषः श्लेष अलंकारों से भी नन्ददास का काव्य सुशोभित है। यह श्लेष उनके काव्य में अनेक स्थलों पर दिखाई देता है। इस अलंकार में एक शब्द के साथ कई अर्थ चिपके हुए रहते हैं। महाकवि नन्ददास के काव्य में 'श्लेष' अलंकारों से सम्बन्धित कुछेक उदाहरणों के विवरण दर्शननीय हैं। यथाः-

'कोउ कहै रे मधुपभेष उनको क्यों धारयो।
स्याम पीत, गुंजार बेनु, किंकिनि झनकारयौ।।
नापुर गोरसचारि कै फिरि आयो या देस।
इनको जिनि मानौ कोउ, कपटी इनको भेस।।'' [6]

वक्रोतिः- जहाँ श्लेष या काकु में से किसी एक के द्वारा अर्थान्तर की कल्पना की जाए वहां 'वक्रोति' अलंकार होता है। महाकवि नन्ददास कृत काव्य-कृतियों में 'वक्रोक्ति' अलंकार का प्रयोग भी कहीं-कहीं मिलता है।

'कोउ कहै रहे मधुप कहा तू रस की जाने।' [7]

सारांश में कहा जा सकता है कि नन्ददास के काव्य में शब्दांलकारों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग मिलता है। अनुप्रास की छटा तो सर्वत्र विद्यमान है। शब्दालंकारों से उनके काव्य में नाद-सौन्दर्य प्रवाह, सजीवता एवं कोमलता आदि गुणों का अनायास ही हो गया है। अनुप्रासादि अलंकारों से लदी हुई जिस आदर्श साहित्यिक भाषा की कवि ने सृष्टि की है उसमें सरस प्रवाह, अद्‌भूत संगीत है और हृदय पर चोट करने की पूर्ण क्षमता है।

2. अर्थलंकार :- अर्थ में रमणीयता उत्पन्न करने वाले अलंकार अर्थालंकार कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा प्रतीष, द्रष्टान्त, उदाहरण, अर्थान्तरूयास अन्योक्ति वैषम्यमूलक, असंगति, विरोधाभास, विभावना, विषम, अतिशयोक्ति, पर्यायोक्ति, ब्याज-स्तुति आदि अलंकार आते हैं। नन्ददास के काव्य में अर्थालंकार की छटा भी अलोकनीय है। कतिपय अर्थालंकारों के उदाहरण देखिए-

''तब नागर नन्दढाल चाहि चित चरित होत ज्यों।
निज प्रतिबिंब विलास निरखि सिसु भूलि रहता ज्यों।।'' [8]

अथवा

''सब के मुख अवलोकत पिय के नैन यों।
बहुत सरद ससि माँझ अखरे हैं चकारै ज्यों।।'' [9] (उपमा अलंकार)
'ललित विसाल दियति लनु निकर-निसाकर।
कृष्ण भक्ति प्रतिबन्ध-तिमिर कहुँ कोटि दिवाकर।।'' (रूपक निरंग)
'नीलोत्दल स्दाम अंग नव-जीवन भ्राजै।
कुटिल अलक मुण-कमल मनो अलि-अवलि विराजै।।'' (उत्प्रेक्षा अलंकार)
'अस अद्‌भूत गोपाल लाल सब काल बसत जहाँ।
याही तै बैकण्ठ-विभव लागत तहाँ।।' [10] (प्रतीप अलंकार)
'प्रेम एक इक चिंत सौं, एकहि संग समाय।
गांधी की सौंधों नहीं, जन-जन हाय विकाय।।' [11] (द्रष्टान्त अलंकार)
'युनि कहै सब तै साधु संग उतम है भाई।
पारस परसै लोहा, तुरंत कंचन हवै जाई।। [12] (अर्थान्तरन्यास अलंकार)
'गाति वियरीत रची तब नैन।
गरजै धन बरसे तिय नैन।। [13] (असंगति अलंकार)
उज्जवल रस कौ यह सुभाष बांकी छवि छवि।
बेक चहनि पुनि कहनि बंक अति रसहिं बढ़ावै।। [14] (विरोधाभास अलंकार)
'रूधिरपान कियौ बहुत के अधर अरून रंग रात।
अब ब्रज में आचे कहा करन कौन को घात।। [15] (विषम अलंकार)

इस प्रकार हम देखते हैं कि नन्नदास की अर्थालंकार योजना बड़ी सफल है। एकाध् अपवाद को छोड़कर सर्वत्र ही अंलकार, भागों को उत्कृष्टता में वृद्धि करते हैं।

3. उभयालंकार (मिश्रालंकार) : जहाँ एक पद (छन्द) या वाक्यादि में एक से अधिक अलंकारों का मिश्रण हों, वहाँ उभयालंकार (मिश्रालंकार) होता है। इसमें दो भेद हैं - क. संसृष्टि ख. संकर
(क) संसृष्टि : 'जहाँ एक ही छन्द में हो या अधिक अलंकार तिल-चावल की भांति परस्पर निरपेक्ष रूप में प्रयुक्त होते हैं, वहाँ संसृष्टि अलंकार होता है।' [16]
(ख) संकर : 'जहाँ एक ही छन्द में अनेक अलंकार का सम्मेलन नीर-क्षीर (दूध-पानी की भाँति मिले हुए)- न्याय से अर्थात् परस्पर सापेक्ष रूप से हो, वहाँ संकर अलंकार होता है।'
लगभग नन्ददास के समस्त काव्य में उभयालंकारों को स्थल-स्थल पर देखा जा सकता है। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ रासपंचाध्यायी और भ्रमरगीत उभयालंकारों से सुसज्जित दिखाई पड़ती है। अब उभयालंकारों के कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य है-

निष्कर्ष

संक्षेप में कहा जा सकता है कि महाकवि नन्नदास ने अपने काव्य में सभी प्रकार के अलंकारों का प्रयोग सशक्त एवं सजीव ढंग से किया है। उनके काव्य में अलंकार साधन रूप में प्रयोग किए गए हैं। साध्य रूप में नहीं। व्यर्थ का अलंकार चत्मकार प्रदर्शन नन्नदास जी ने उद्‌घाटित नहीं किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचिः-

1. आचार्य दण्डीः काव्यादर्श पृ0 62।
2. डॉ0 नगेन्द्र (सं.) काव्यांलकार सूत्रवृति, पृ0 4।
3. आचार्यभामहः काव्यालंकार पृ0 7।
4. सुमित्रानन्दन पंत - पल्लंत (भूमिका भाग) पृ0 32।
5. डॉ0 ओमप्रकाश शर्मा शास्त्री काव्यालोचन पृ0 162।
6. श्री ब्रजरत्नदास (सं.) नन्ददास ग्रंथावली (रासपंचाध्यायी) पृ0 4।
7. वही श्री कृष्ण सिद्धान्त पंचाध्यायी, पृ0 38।
8. डॉ0 राजवंश सहाय 'दीश' अलंकारानुशीलन, पृ0 88।
9. श्री ब्रजरत्नदास (सं.)ः नन्ददास ग्रंथावली (रासपंचाध्यायी) पृ0 14।
10. श्री ब्रजरत्नदास (सं.)ः नन्ददास ग्रंथावली (भ्रमरगीत) पृ0 161।
11. श्री ब्रजरत्नदास (सं.) पूर्वातर पृ0 18।
12. श्री ब्रजरत्नदास (सं0) : नन्ददास ग्रंथावली (रा.पं.) पृ0 13।
13. वही, (रूपमंजरी) पृ0 216।
14. वही, (भ्रमरगीत) पृ0 159।
15. वही, (रूपमंजरी) प0 148।
16. वही, (रा.पं.) पृ0 111।
17. वही (भ्रमरगीत) पृ0।
18. डा. रासवंश सहाय : अलंकाशनुशीलन, पृ0 509।
19. वही पृ0।